UNITED STATES EDUCATIONAL FOUNDATION IN INDIA

साभार: एडम ग्रॉट्स्की

एडम ग्रॉट्स्की भारत में फ़ुलब्राइट कार्यक्रम के नए प्रमुख

कुछ अर्से से मैं भारत लौटना ही चाह रहा था, पर मुझे पक्के तौर पर यह मालूम नहीं था कि मैं किस हैसियत से लौटूंगा।'' यह कहना है यू.एस.एजुकेशनल फ़ाउंडेशन इन इंडिया यानी यूसेफ़ी के नए कार्यकारी निदेशक एडम ग्रॉट्स्की का। वर्ष 1992 से अंतरराष्ट्रीय शिक्षा, ज़्यादातर स्नातक स्तर विदेश अध्ययन कार्यक्रम, के क्षेत्र से जुड़े रहे ग्रॉट्स्की तीसरी बार मई की शुरुआत में भारत पहुंचे। वह अमेरिका के इस प्रख्यात आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों और विद्वानों के साथ कार्य कर पाने के अवसर को लेकर बहुत उत्साहित हैं। ''इस पद को लेकर जो बात मुझे रोमांचित करती है वह यह है कि मैं अंतरराष्ट्रीय शिक्षा के और क्षेत्रों तक पहुंच सकूंगा और कई क्षेत्रों में शीर्षस्थ भारतीय और अमेरिकी विद्वानों के साथ विविध विषयों पर कार्य कर पाऊंगा।'' उन्हें आशा है कि यूसेफ़ी निदेशक मंडल के सहयोग से वह फ़ुलब्राइट कार्यक्रम में अधिक विविधता ला पाएंगे। वह अपनी बात समझाते हैं, ''मैं उस वर्ग तक पहुंचना चाहता हूं जिसे बहुत सुविधाएं नहीं मिल पाई हैं.... मैं भारत के उन क्षेत्रों के छात्रों और अध्येताओं तक पहुंचना चाहूंगा जिन्हें पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं मिल पाया है।''

दक्षिण एशिया से ग्रॉट्स्की का सम्बन्ध दो वर्ष की आयु में तब जुड़ा जब उनके पिता तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान में ढाका में अध्यापकों के प्रशिक्षण और विद्यालयों की स्थापना में अमेरिकन फाउंडेशन फ़ॉर द ब्लाइंड की सहायता कर रहे थे। 1971 में उनका परिवार इस युद्धग्रस्त देश से चला गया लेकिन वहां के किस्सों और फाटोग्राफों को देखते-सुनते आए एडम ने 1985 में हाईस्कूल छात्र के रूप में एक साल श्रीलंका में बिताने का फैसला लिया। बाद में यूनिवर्सिटी ऑफ़ विस्कांसिन के कॉलेज इयर इन इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत वह एक साल वाराणसी में रहे। उन दिनों को याद करते वह कहते हैं, ''मैं वाकई यहां की संस्कृति में डूब-सा गया था। मैं भारतीय शास्त्रीय संगीत का अध्ययन करते, भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली पर शोध करते, हिन्दी में अच्छी खासी गति पा चुका था... यह मेरे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण अनुभवों में से एक है और आज तक मुझे व्यापक स्तर पर अवसर उपलब्ध करवाने को प्रेरित करता है।'' दक्षिण एशियाई अध्ययन में मास्टर्स उपाधि पाने के बाद ग्रॉट्स्की भारत में तीन साल उसी एक्सचेंज कार्यक्रम के समन्वयक रहे जिसके तहत वह खुद भारत आए थे।

-एल.के.एल.